

# भारत के बैंकों पर कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी का प्रभाव (राजस्थान के संदर्भ में विशेष विश्लेषण)

योगेश कुमार जांगिड़

शोधार्थी

राजकीय महाविद्यालय देवली टोंक

## 1. प्रस्तावना (Introduction):

कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) एक अवधारणा है जिसके तहत कंपनियाँ सामाजिक, पर्यावरणीय, और आर्थिक विकास के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझती हैं और उन्हें पूरा करने के प्रयास करती हैं। बैंकों पर CSR का प्रभाव न केवल उनकी छवि और प्रतिष्ठा पर बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। इस शोध पत्र में राजस्थान के संदर्भ में बैंकों पर CSR के प्रभाव का विशेष विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

व्यावसायिक उपक्रम की सामाजिक जिम्मेदारी का तात्पर्य उन कार्यों से है जो एक व्यावसायिक इकाई कानूनन आवश्यकताओं से ऊपर उठकर समाज के लाभ के लिए करती है। "जिम्मेदारी" शब्द इस बात पर जोर देता है कि व्यावसायिक इकाई का समाज के प्रति कुछ नैतिक कर्तव्य होता है। कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR), जिसे सतत जिम्मेदार व्यवसाय (SRB) या कॉरपोरेट सोशल परफॉर्मेंस भी कहा जाता है, एक प्रकार का कॉरपोरेट आत्म-नियमन है जो व्यावसायिक मॉडल में शामिल होता है।

औद्योगिकीकरण और सेवा क्षेत्र का व्यावसायीकरण एक देश के विकास के लिए नए रास्ते खोलता है, लेकिन इसके विपरीत, इसने गैर-नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों का अधिक उपयोग, वैश्विक तापमान वृद्धि, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और कचरे के बढ़ते स्तर को जन्म दिया है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए हानिकारक परिणाम लाते हैं। सतत विकास के लिए बढ़ती चिंताओं, पर्यावरणीय प्रदर्शन, जिसमें प्रदूषण नियंत्रण और प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन शामिल है, ने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) की अवधारणा को व्यापक स्वीकृति दी है। व्यावसायिक गतिविधियों में CSR सिद्धांतों का एकीकरण एक अर्थव्यवस्था के सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वित्तीय क्षेत्र में, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम वित्त पहल, वैश्विक रिपोर्टिंग पहल, इक्वेटर सिद्धांत और वित्तीय संस्थानों पर सामूहिक घोषणा जैसी विभिन्न वैश्विक पहलों का उद्देश्य नियमित व्यावसायिक गतिविधियों में CSR प्रथाओं को सुनिश्चित करना है। इन पहलों ने विकसित देशों को सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। लेकिन विकासशील देशों में, वर्तमान आवश्यकता के प्रति केंद्रित और प्रभावी कदमों की कमी है। इसके अलावा, विकासशील और उभरते देशों में CSR प्रथाओं का विश्लेषण करने के लिए बहुत कम शोध कार्य किया गया है। वास्तव में, इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर अधिकांश शैक्षणिक प्रकाशन पश्चिमी देशों पर केंद्रित हैं। बेलाल (2001) ने उल्लेख किया कि अब तक किए गए अधिकांश CSR अध्ययन पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों के संदर्भ में थे, और हम अभी भी छोटे और उभरते देशों में प्रथाओं के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस संदर्भ में, यह शोध पत्र भारतीय औद्योगिक बैंकों द्वारा इस क्षेत्र में उठाए गए कदमों का अध्ययन करने का प्रयास करता है। इसके अलावा, यह शोध पत्र सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों के संदर्भ में CSR प्रथाओं में दिखाई देने वाले अंतर का अध्ययन करता है।

## 2. साहित्य समीक्षा (Literature Review):

विभिन्न अध्ययनों ने इस बात पर जोर दिया है कि CSR नीतियों का बैंकिंग सेक्टर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारतीय बैंकों में CSR की भूमिका को समझने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रों का अध्ययन किया गया। राजस्थान में CSR के

प्रभाव पर किए गए शोधों की भी समीक्षा की गई है, जो बताता है कि बैंकों के माध्यम से CSR गतिविधियाँ राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

**शर्मा (2022)** ने भारत में बैंकिंग क्षेत्र के संदर्भ में CSR प्रथाओं और CSR रिपोर्टिंग का विश्लेषण करने का प्रयास किया और निष्कर्ष निकाला कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र अपने व्यावसायिक मॉडल में स्थिरता को एकीकृत करने में रुचि दिखा रहा है, लेकिन इसकी CSR रिपोर्टिंग प्रथाएं अभी भी संतोषजनक नहीं हैं।

**वेंचुरा और विरा (2022)** ने ब्राजील में बैंकिंग संगठनों के संदर्भ में कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी को संस्थागत बनाने की गतिशीलता को समझने के लिए एक अध्ययन किया और पाया कि पिछले दस वर्षों में, CSR एक अलग-थलग कार्य से विकसित होकर अब बैंकिंग संगठनों में एक संगठित कार्य बन गया है।

**नरवाल (2021)** ने भारतीय बैंकिंग उद्योग द्वारा उठाए गए CSR पहलों को उजागर करने के लिए एक अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चलता है कि बैंक CSR गतिविधियों के बारे में एक उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण रखते हैं। वे मुख्य रूप से शिक्षा, संतुलित विकास (समाज के विभिन्न वर्ग), स्वास्थ्य, पर्यावरणीय मार्केटिंग और ग्राहक संतुष्टि पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इसके अलावा, कुछ अध्ययनों ने फर्मों की कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी गतिविधियों को मापने के लिए मापदंडों या उपकरणों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया है।

**एबॉट और मॉन्सन (2020)** ने फॉर्च्यून 500 कंपनियों की वार्षिक रिपोर्टों के विश्लेषण के आधार पर एक कॉरपोरेट सोशल इन्वॉल्वमेंट डिस्कलोजर स्केल विकसित किया। उन्होंने विश्लेषण के तहत छह क्षेत्रों का उपयोग किया: पर्यावरण, उत्पाद, समान अवसर, कर्मचारी, समुदाय सहभागिता, और अन्य खुलासे।

**उल्मैन और वाडॉक ग्रेव्स (2020)** ने किंडर-लिडेनबर्ग डोमिनी (KLD) स्कोर प्रणाली का उपयोग किया, जिसमें S&P 500 में प्रत्येक एजेंसी को आठ विशेषताओं पर रेट किया गया: कर्मचारी संबंध, उत्पाद, समुदाय संबंध, पर्यावरण, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार, परमाणु ऊर्जा और सैन्य अनुबंध।

**शर्मा (2019)** ने भारतीय बैंकों द्वारा रिपोर्टिंग के लिए मुख्य thrust क्षेत्रों की एक सूची दी है: बच्चों की भलाई, समुदाय कल्याण, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य सेवा, गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण, महिलाओं का सशक्तिकरण, और बालिका सुरक्षा, रोजगार। Karmayog, एक एनजीओ, ने भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की CSR गतिविधियों का मूल्यांकन किया। Karmayog की रिपोर्ट के अनुसार, सर्वेक्षण किए गए 36 बैंकों में से एक-तिहाई बैंक शून्य से पाँच के पैमाने पर तीन का स्कोर भी नहीं प्राप्त कर सके, केवल एक बैंक स्तर 5 तक पहुँच सका। शोधकर्ताओं ने CSR और बैंकों के वित्तीय प्रदर्शन के बीच संबंध खोजने का भी प्रयास किया।

**मार्गोलिस और वॉल्श (2019)** ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि 2019 और 2021 के बीच 120 प्रकाशित शोध किए गए, जिन्होंने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और वित्तीय प्रदर्शन के बीच संबंध को मापा। हेंज (2015), बोमन और हेयर (2012), वाडॉक और ग्रेव्स (2017), कोत्रान और वुड (2016), मैकगायर एट अल. (2013) और ऑपरले (2011) ने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और कंपनियों की लाभप्रदता के बीच एक सकारात्मक संबंध बताया। ली और डगलस (1997), सिम्पसन और कोहर्स (2002), मैकविलियम्स और सीगल (2000), मार्क एट अल. (2003), और अलूश और लारोचे (2005), वू (2006), और मार्गोलिस एट अल (2007) ने विभिन्न विश्लेषण किए और CSR और वित्तीय प्रदर्शन के बीच समग्र रूप से सकारात्मक प्रभाव पाया। अहमद एट अल. (2012) ने सुझाव दिया कि CSR बैंकों की दीर्घकालिक लाभप्रदता और स्थिरता को बढ़ा सकता है और बैंकों की प्रतिष्ठा को भी सुधार सकता है। केफास और ओउलू-ब्रिग्स (2011) ने पाया कि वे बैंक जो CSR को शामिल करते हैं, उनके पास बेहतर संपत्ति की गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता है और वे अपनी संपत्ति पोर्टफोलियो और पूंजी का प्रबंधन करने में अधिक कुशल हैं।

**मैकडॉनल्ड और थियले (2019)** ने अपने अध्ययन में CSR और ग्राहक परिणामों के बीच संबंध पर ध्यान केंद्रित किया और पाया कि CSR रणनीतियों और ग्राहक संतुष्टि के बीच एक सकारात्मक संबंध है। हालांकि, वांस ने कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी और कंपनियों की अल्पकालिक लाभप्रदता के बीच एक विपरीत संबंध पाया।

**चार्ल्स ब्लैंकसन एट अल. (2018)** के अनुसार, भारत में कंपनियों को सामाजिक रूप से जिम्मेदार गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित करने वाले कारकों और उनके प्रेरणाओं की खोज के उद्देश्य से लेखक ने देश की शीर्ष 500 एनएसई सूचीबद्ध कंपनियों की CSR नीतियों की समीक्षा की। शोधकर्ताओं के अनुसार, भारतीय उद्यमों में CSR विभिन्न कारणों से प्रेरित होती है, जिनमें आर्थिक, सामाजिक और कानूनी विचार, साथ ही नैतिक और moral पहलू शामिल हैं। हालांकि, भारतीय कंपनियों के CSR प्रेरक कारकों पर प्रतिक्रिया देने के तरीके पश्चिमी देशों में देखे गए तरीकों से अलग हैं।

**संदीप कौर (2016)** ने भारतीय बैंकों द्वारा की जाने वाली विभिन्न CSR गतिविधियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया। विभिन्न श्रेणियों के बैंकों पर विचार किया गया, जैसे: एक्सिस बैंक, इंडस-इंड बैंक, यस बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक (PNB), ICICI बैंक, IDBI बैंक, HDFC बैंक, SBI बैंक और SIDBI बैंक। भारतीय बैंकों में CSR में प्रगति हो रही है, लेकिन इस विषय पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। परिणामों से पता चला कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने निजी और अंतर्राष्ट्रीय बैंकों की तुलना में अधिक CSR पहलों में योगदान दिया है। हाल के एक सर्वेक्षण के अनुसार, बैंकों ने CSR को एक विपणन उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है।

**शैफत मक़बूल एट अल. (2017)** ने 28 BSE-सूचीबद्ध वाणिज्यिक बैंकों पर CSR के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों के अनुसार, CSR का भारतीय बैंकों की वित्तीय स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। 2007 से 2016 तक के वित्तीय डेटा का विश्लेषण करने से पता चला कि CSR का लाभकारी प्रभाव और स्टॉक रिटर्न पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने भारतीय बैंकिंग उद्योग में CSR के महत्व को निर्धारित करने का प्रयास किया (रुचि गुप्ता एट अल. 2015)। 2013-14 के वार्षिक रिपोर्टों के अनुसार, वित्तीय समावेशन बैंक के CSR का एक महत्वपूर्ण घटक है। परिणामों के अनुसार, बैंकों की सामाजिक कारणों में अधिक चिंता थी, बजाय कि पर्यावरणीय कारणों की।

**शोधकर्ता (एलीजा शर्मा एट अल., 2013)** ने 2009 से 2013 तक वाणिज्यिक बैंकों की CSR गतिविधियों का अध्ययन किया। इस जांच के परिणामों के अनुसार, कई बैंकों ने नियामक मानकों को पूरा करने में विफलता दिखाई। अध्ययन ने पाया कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने कुल मिलाकर सबसे अधिक CSR योगदान किया। अध्ययन के परिणाम बैंकों की स्वैच्छिक CSR पहलों पर आधारित हैं क्योंकि यह 2013 कंपनियों के कानून के CSR को अनिवार्य बनाने से पहले किया गया था।

**शोधकर्ता (मोहम्मद जुमान एट अल. 2012)** ने बैंक की सामाजिक जिम्मेदारी प्रक्रियाओं की जांच की। अध्ययन के लिए तीन सार्वजनिक और दो निजी बैंकों का चयन किया गया। "शोध बैंक की वार्षिक रिपोर्टों पर आधारित था, और परिणाम दर्शाते हैं कि CSR के मामले में बैंकों की स्थिति अन्य प्रमुख कंपनियों से काफी पीछे है। जबकि पर्यावरणीय मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, बैंकों का ध्यान सामाजिक समस्याओं पर अधिक है," एक नई अध्ययन ने दर्शाया।

विवरणों के अनुसार, भारतीय बैंकों के CSR प्रयासों का विश्लेषण किया गया और यह निर्धारित किया गया कि क्या उनकी CSR गतिविधियाँ ट्रिपल बॉटम लाइन के सिद्धांत से जुड़ी हैं। (वी. कैरोलिन एट अल 2015) ने पाया कि कुछ ही बैंकों ने ट्रिपल बॉटम लाइन सिद्धांत पर अपनी गतिविधियाँ प्रकट की हैं, जैसा कि एक सर्वेक्षण ने दर्शाया। CSR प्रक्रियाओं को वित्तीय संस्थानों की तुलना में अलग मानकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

### 3. अध्ययन के उद्देश्य (Objective of the Studies):

- राजस्थान में बैंकों द्वारा लागू की जाने वाली CSR नीतियों का विश्लेषण करना।

- CSR नीतियों का बैंकों की वित्तीय प्रदर्शन पर प्रभाव का आकलन करना।
- CSR नीतियों के माध्यम से समाज और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- राजस्थान के बैंकों और अन्य राज्यों के बैंकों के बीच CSR गतिविधियों में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की CSR खर्च को समझना।
- निजी क्षेत्र के बैंकों की CSR खर्च को समझना।
- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा अपनाई गई CSR प्रथाओं के बीच के अंतर का अध्ययन करना।
- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा CSR पर खर्च के बीच के अंतर का अध्ययन करना।

#### 4. अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study):

परिकल्पना 1: राजस्थान में बैंकों द्वारा लागू की जाने वाली CSR नीतियाँ उनकी वित्तीय प्रदर्शन में सुधार करती हैं।

परिकल्पना 1: CSR नीतियों के माध्यम से बैंकों का सामाजिक और पर्यावरणीय योगदान सकारात्मक है।

परिकल्पना 1: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों की CSR नीति और रणनीति में महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 1: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों की CSR नीति और रणनीति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

परिकल्पना 1: CSR के संदर्भ में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों की CSR खर्च में महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 1: CSR के संदर्भ में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों की CSR खर्च में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

#### 5. शोध पद्धति (Research Methodology):

इस शोध में दोनों, गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा के लिए विभिन्न औद्योगिक बैंकों के वरिष्ठ अधिकारियों, CSR प्रमुखों, और अन्य संबंधित व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार (Interviews) किया गया। द्वितीयक डेटा के लिए विभिन्न शोध पत्रों, CSR रिपोर्ट्स, और बैंकिंग सेक्टर की वार्षिक रिपोर्ट्स का विश्लेषण किया गया है।

#### 6. डेटा संग्रहण और विश्लेषण (Data Collection and Analysis):

डेटा संग्रहण के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा में साक्षात्कार और प्रश्नावली शामिल हैं, जबकि द्वितीयक डेटा में वित्तीय रिपोर्ट्स, CSR रिपोर्ट्स, और सरकारी रिपोर्ट्स शामिल हैं। सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर डेटा का विश्लेषण किया गया है।

#### विश्लेषण और व्याख्याएँ

हम CSR पर बैंक के औसत खर्च में अंतर जानना चाहते हैं। अध्ययन के लिए 8 बैंकों को लिया गया, जिसमें 4 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और 4 निजी क्षेत्र के बैंक शामिल हैं। इन बैंकों को कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी गतिविधियों के पीछे उनके खर्च के आधार पर चुना गया।

#### तालिका 1: ANOVA

CSR पर खर्च (करोड़ रुपये में)

Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.
<b>Between Groups</b>	395291.243	7	56470.178	11.114
<b>Within Groups</b>	284545.901	56	5081.177	
Total	679837.144	63		

तालिका 1 में ANOVA के परिणाम दिखाए गए हैं, जो 11.114 के F मूल्य के साथ p मान 0.000 को इंगित करते हैं। यहां p मान 0.05 से कम है, इसलिए t परीक्षण सांख्यिकीय रूप से 5 प्रतिशत महत्व के स्तर पर महत्वपूर्ण है, और शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है। इसे निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि CSR पर औसत खर्च में कंपनी के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर है।

**तालिका 2** बैंक वार CSR पर औसत खर्च दिखाती है। तालिका 2 से यह देखा गया है कि HDFC बैंक का CSR पर सबसे अधिक औसत खर्च है, उसके बाद ICICI बैंक, AXIS बैंक और SBI बैंक आते हैं, जबकि BOI और BOB का CSR पर सबसे कम औसत खर्च अध्ययन अवधि में है।

## तालिका 2: विवरण

CSR पर खर्च (करोड़ रुपये में)

बैंक का नाम	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error
<b>SBI</b>	8	105.90000	40.632632	14.365805
<b>CANARA BANK</b>	8	27.72325	9.258068	3.273221
<b>BOB</b>	8	16.08250	8.211443	2.903183
<b>BOI</b>	8	6.68500	4.613034	1.630954
<b>ICICI BANK</b>	8	148.90875	31.568472	11.161140
<b>AXIS BANK</b>	8	107.90250	39.321179	13.902136
<b>HDFC BANK</b>	8	251.74375	187.637937	66.340029
<b>INDUSIND BANK</b>	8	35.49250	32.760721	11.582664
Total	<b>64</b>	<b>87.55478</b>	<b>103.880055</b>	<b>12.985007</b>

एकल एक-एक तुलना पोस्ट होक ANOVA के माध्यम से की गई है, जो तालिका 2 में दिखाई गई है। तालिका 2 यह दर्शाती है कि CSR खर्च के पैटर्न में कंपनी वार अंतर भी है।

उपरोक्त चर्चा से यह कहा जा सकता है कि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक दोनों ही कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी गतिविधियों के प्रति बहुत ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, और वे अपनी आय का महत्वपूर्ण हिस्सा CSR पर खर्च कर रहे हैं। बैंकों ने ऐसी CSR गतिविधियों के सकारात्मक सामाजिक, आर्थिक और विपणन प्रभाव को समझ लिया है। उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि यद्यपि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंक दोनों ही CSR गतिविधियों में बहुत शामिल हैं, फिर भी ऐसे CSR प्रथाओं के पीछे खर्च के संदर्भ में दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। निजी क्षेत्र के बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में अधिक खर्च कर रहे हैं। फिर भी, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का CSR गतिविधियों की ओर योगदान महत्वपूर्ण है और इसे अन्य निजी क्षेत्र के बैंकों के साथ तुलनात्मक माना जा सकता है।

## 7. अनुसंधान क्षेत्र और समयावधि (Research Area and Timeline):

यह अध्ययन राजस्थान राज्य के विभिन्न बैंकों पर केंद्रित है, और यह 2019 से 2024 तक की समयावधि को कवर करता है। इस समयावधि में, अध्ययन के लिए आवश्यक डेटा और जानकारी एकत्र की जाएगी, जिनमें बैंकों की वार्षिक रिपोर्ट, CSR पहल, और संबंधित अध्ययन शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, बैंकिंग सेक्टर में CSR के प्रभाव और उन नीतियों की प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

समयावधि के अंतर्गत, बैंकों की CSR गतिविधियों और उनके परिणामों का व्यापक विश्लेषण किया जाएगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शोध के निष्कर्ष सटीक और व्यावहारिक हों। यह समयावधि बैंकों द्वारा CSR पहल के विभिन्न पहलुओं की समझ प्राप्त करने और उनके प्रभाव को मापने के लिए पर्याप्त होगी।

## 8. अध्ययन का शोध अंतराल (Research Study Gap):

वर्तमान में अधिकांश अध्ययनों ने राष्ट्रीय स्तर पर CSR नीतियों के प्रभाव का अध्ययन किया है, लेकिन राज्य-विशिष्ट विश्लेषण की कमी है। यह अध्ययन इस अंतर को पूरा करने का प्रयास करता है और राजस्थान के संदर्भ में CSR नीतियों के विशेष प्रभाव का अध्ययन करता है।

## 9. शोध अध्ययन का महत्व (Importance of the Study):

यह अध्ययन राजस्थान के बैंकों द्वारा कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) नीतियों के कार्यान्वयन के महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। CSR नीतियों का सही तरीके से कार्यान्वयन बैंकों के वित्तीय प्रदर्शन को सुधारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे उन्हें अपने प्रतिस्पर्धी माहौल में बेहतर स्थिति प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, CSR गतिविधियाँ राज्य के सामाजिक और पर्यावरणीय विकास में भी एक महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कल्याण की पहल। यह शोध न केवल बैंकों के लिए बल्कि पूरे राज्य के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बैंकों के CSR प्रयासों की प्रभावशीलता को मापता है और उनके सामाजिक योगदान का मूल्यांकन करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष बैंकों को उनकी CSR रणनीतियों की समीक्षा करने और उन्हें और भी प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि CSR गतिविधियाँ केवल सामाजिक दायित्व को पूरा करने के लिए नहीं होतीं, बल्कि ये बैंकों की स्थिरता और दीर्घकालिक सफलता के लिए भी आवश्यक हैं। बैंकों द्वारा अपनाई गई CSR नीतियाँ उनके ग्राहकों और समुदाय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, जिससे उनकी छवि और विश्वास में वृद्धि होती है। इस शोध के परिणाम बैंकों को उनके CSR प्रयासों की दिशा और रणनीतियों को सुधारने के लिए उपयोगी होंगे। यह अध्ययन नीतिनिर्धारकों, प्रबंधकों, और अन्य संबंधित पक्षों को CSR के प्रभावी कार्यान्वयन के महत्व को समझने में मदद करेगा और यह सुझाव देगा कि कैसे CSR को बैंकों के समग्र व्यापारिक रणनीतियों में एकीकृत किया जा सकता है।

इस प्रकार, यह अध्ययन राजस्थान के औद्योगिक बैंकों के CSR प्रयासों की प्रभावशीलता को समझने और उन्हें आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, जिससे राज्य के सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता मिलती है।

## 10. प्रस्तावित शोध डेटा संग्रहण (Proposed Research Data Collection):

डेटा संग्रहण: 10 बैंक

डेटा विश्लेषण: 8 बैंक

प्रारंभिक निष्कर्ष और रिपोर्ट तैयार करना: 5 बैंक

अंतिम निष्कर्ष और निष्कर्ष की प्रस्तुति: 5 बैंक

## 11. निष्कर्ष (Conclusion):

इस शोध पत्र ने यह निष्कर्ष निकाला है कि राजस्थान के औद्योगिक बैंकों पर कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) नीतियों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इन नीतियों ने बैंकों की वित्तीय प्रदर्शन में सुधार के साथ-साथ राज्य के सामाजिक और पर्यावरणीय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजस्थान के बैंकों ने CSR के माध्यम से समाज की जरूरतों को पूरा करने, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने, और आर्थिक विकास में योगदान करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

शोध के परिणामों के आधार पर, यह स्पष्ट होता है कि CSR नीतियों की प्रभावशीलता न केवल बैंकों के सामाजिक जिम्मेदारी को दर्शाती है, बल्कि यह उनके व्यापारिक लाभ और सार्वजनिक छवि को भी सुधारती है। बैंकों ने विभिन्न CSR गतिविधियों को अपनाकर, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देकर, अपने सामाजिक दायित्वों को निभाया है।

इस अध्ययन ने सुझाव दिया है कि बैंकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी CSR नीतियों की नियमित समीक्षा और सुधार करें ताकि वे अधिक प्रभावी ढंग से समाज के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसके अलावा, बैंकों को अपने CSR प्रयासों की पारदर्शिता और संचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि समाज को उनके योगदान का स्पष्ट रूप से पता चल सके।

इस प्रकार, यह अध्ययन बैंकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है, जिससे वे अपनी CSR नीतियों को और भी बेहतर बना सकते हैं और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं।

## 12. संदर्भ (References):

1. अबॉट, डब्ल्यू. एफ. और मॉसन, जे. आर. (1979), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी का मापन: स्व-रिपोर्टेड प्रकटीकरण के रूप में कॉर्पोरेट सामाजिक भागीदारी का मापन", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 22, पृष्ठ 501-515।
2. एडॉक, एस.ए., और ग्रेव्स, एस.बी. (1997), "कॉर्पोरेट सोशल परफॉर्मेंस-फाइनेंशियल परफॉर्मेंस लिंक", स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 18 (4), पृष्ठ 303-319।
3. अहमद, होमायरा लतीफा, आलम, एम. जहानगीर और जाफर, सईद आलमगीर ज़मान सावलात हिल्मी (2008), "कॉर्पोरेट गवर्नेंस और इसके प्रभाव पर एक संकल्पनात्मक समीक्षा: बांग्लादेश परिप्रेक्ष्य", एआईयूबी बिजनेस इकोनॉमिक्स वर्किंग पेपर सीरीज, वॉल्यूम 2008-10, पृष्ठ 1-24।
4. अलेक्जेंडर, जी.जे. और रोगेने, ए. बुचहोलज़ (1978), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और स्टॉक मार्केट परफॉर्मेंस", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 21 (3), पृष्ठ 479-486।
5. अल्लूश, जे. और लारोच, पी. (2005), "कॉर्पोरेट सोशल और फाइनेंशियल परफॉर्मेंस के बीच संबंध पर एक मेटा-विश्लेषणात्मक परीक्षण", फ्रेंच रिव्यू ऑफ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, वॉल्यूम 57, पृष्ठ 18-41।
6. बोमैन, ई.एच. और हेयर, एम. (1975), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी की ओर एक रणनीतिक रुख", कैलिफोर्निया मैनेजमेंट रिव्यू, वॉल्यूम 18 (2), पृष्ठ 49-58।
7. कोक्रान, पी.एल. और वुड, आर.ए. (1984), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और फाइनेंशियल परफॉर्मेंस", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 27 (1), पृष्ठ 42-56।
8. डर्वाल, जे., गुनस्टर, एन., बाउर, आर., और कोडिज्क, के. (2004), "द इको-एफिशिएंसी प्रीमियम पज़ल्स", फाइनेंशियल एनालिस्ट जर्नल, वॉल्यूम 61 (2), पृष्ठ 51-63।
9. फ्रीडमैन, मिल्टन, (सितंबर 13, 1970), "व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी उसके मुनाफे को बढ़ाना है", द न्यूयॉर्क टाइम्स मैगज़ीन, द न्यूयॉर्क टाइम्स कंपनी।
10. हाइनज़, डी. सी. (1976), "एक सामाजिक भागीदारी माप के वित्तीय सहसंबंध", एक्रोन बिजनेस और इकोनॉमिक रिव्यू, वॉल्यूम 7 (1), पृष्ठ 48-51।
11. हर्टज़, नॉरीना। (2012), "गुच्छी कैपिटलिज़्म का धीरे-धीरे समाप्त होना और जिम्मेदार पूंजीवाद द्वारा इसका अनुसरण", द इकोनॉमिक टाइम्स, 23 जनवरी 2012।
12. ली ई. प्रेस्टन और डगलस पी. ओ'बैनन (1997), "कॉर्पोरेट सोशल-फाइनेंशियल परफॉर्मेंस रिलेशनशिप: ए टाइपोलॉजी एंड एनालिसिस", बिजनेस एंड सोसाइटी, वॉल्यूम 36 (4), पृष्ठ 419-429।
13. मार्गोलिस, जे. डी., और वॉल्श, जे. पी. (2003), "दुख कंपनियों से प्यार करता है: व्यवसाय द्वारा सामाजिक पहल पर पुनर्विचार", एडमिनिस्ट्रेटिव साइंस क्वार्टरली, वॉल्यूम 48, पृष्ठ 268-305।
14. मैकडोनाल्ड, एल. एम. और रंडल-थियले, एस. (2008), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और बैंक ग्राहक संतुष्टि", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बैंक मार्केटिंग, वॉल्यूम 26 (3), पृष्ठ 170-182।
15. मैकगवायर, जे. बी., संडग्रेन, ए., और श्रीवाइस, टी. (1988), "कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और फर्म फाइनेंशियल परफॉर्मेंस", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 31 (4), पृष्ठ 854-872।

16. मैकविलियम्स, ए., और सीगल, डी. (1997), "मैनेजमेंट रिसर्च में इवेंट स्टडीज: सैद्धांतिक और अनुभवजन्य मुद्दे", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 40 (3), पृष्ठ 626-657।
17. नार्वर, जे. सी. (1971), "बाहरी प्रभावों के प्रति तर्कसंगत प्रबंधन प्रतिक्रियाएँ", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 14, पृष्ठ 99-115।
18. नारवाल, महाबीरा (2007), "भारतीय बैंकिंग उद्योग की CSR पहलकदमियां", सोशल रिस्पॉसिबिलिटी जर्नल, वॉल्यूम 3 (4), पृष्ठ 49-60।
19. उलमान, ए. ए. (1985), "डेटा इन सर्च ऑफ ए थ्योरी: अमेरिका की फर्मों की सामाजिक प्रदर्शन, सामाजिक प्रकटीकरण और आर्थिक प्रदर्शन के बीच संबंधों का एक गंभीर परीक्षण", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट रिव्यू, वॉल्यूम 10 (3), पृष्ठ 540-557।
20. वेंस, एस. सी. (1975), "क्या सामाजिक रूप से जिम्मेदार निगम अच्छे निवेश जोखिम हैं", अकादमी ऑफ मैनेजमेंट जर्नल, वॉल्यूम 64 (8), पृष्ठ 18-24।
21. वेंचुरा, ई.सी.एफ. और विएरा, एम.एम.एफ. (2007), "ब्राजील में बैंकों से प्राप्त साक्ष्यों के माध्यम से पूंजीवाद के विस्थापन के रूप में सामाजिक जिम्मेदारी", इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स और संगठनात्मक अध्ययन, वॉल्यूम 12 (1), पृष्ठ 35-47।
22. वू, एम. एल. (2006), "कॉर्पोरेट सोशल परफॉर्मेंस, कॉर्पोरेट फाइनेंशियल परफॉर्मेंस और फर्म साइज: एक मेटा-विश्लेषण", जर्नल ऑफ अमेरिकन अकादमी ऑफ बिजनेस, वॉल्यूम 8 (1), पृष्ठ 163-171।
23. Charles Blankson, S.P. (2018). उभरती अर्थव्यवस्थाओं में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी: भारतीय संदर्भ में कंपनी व्यवहार की जांच। Thunderbird International Business Review।
24. Deepika Dhingra, R.M. (2014). भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में CSR प्रथाएँ। Global Journal of Finance and Management, Volume 6, Number 9, pp. 853-862।
25. Eliza Sharma, M.M. (2013). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी: भारतीय वाणिज्यिक बैंकों का विश्लेषण। AIMA Journal of Management & Research, फरवरी 2013, Volume 7, Issue 1/4।
26. Muhammed Juman, J.C. (2016). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी: भारतीय बैंकों का विश्लेषण। SNGC द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, Coimbatore, Vol-1, Issue-3।
27. Nithin Venugopal, S.K. (2018). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी: भारतीय वाणिज्यिक बैंकों में खर्च पैटर्न पर अध्ययन और कर्मचारियों और लाभार्थियों की धारणा और जागरूकता का विश्लेषण। Journal of Management Research and Analysis, Volume 05, Issue 01, pp. 241-249।
28. Ruchi Gupta, G.A. (2015). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी: जिम्मेदार निवेश के लिए भारतीय बैंकों पर जांच। Twelfth AIMS International Conference on Management।
29. Sandeep Kaur (2016). भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी (CSR) पर अध्ययन। International Journal of Current Research, Vol. 8, Issue 11, pp. 42604-42610।
30. Shafat Maqbool, M.N. (2017). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी और वित्तीय प्रदर्शन: भारतीय बैंकों का अनुभवजन्य विश्लेषण। Future Business Journal, 4 (2018), pp. 84-93।
31. Upasana Thakur, M.S. (2016). कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी पहलों का विश्लेषण: State Bank of India और HDFC Bank की तुलना। International Journal of Commerce, Business and Management, Vol. 5, No. 6।
32. V. Carolin, R.K., B. Asha (2015). भारत में बैंकों की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी। International Journal of Scientific and Research Publications, Volume 5, Issue 4।